ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 60-61**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

भारतीय जागृतिपुंज – स्वामी दयान्द सरस्वती

श्रीमती निर्मला सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर– इतिहास, ठा. बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला– फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-09.09.2025, Revised-17.09.2025, Accepted-22.09.2025 **E-mail : singhnirmala68@gmail.com**

सारांशः ***स्वामी दयानंद एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक, महान संत और राष्ट्रवादी देशभक्त थे। भारत को सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय रूप से एक करके विदेशी शासन से मुक्ति दिलाना ही स्वामी दयानंद सरस्वती का मुख्य उद्देश्य था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने भारत के कोने कोने में भ्रमण कर अपने व्याख्यानों के द्वारा स्वधर्म, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसंस्कृति और स्वराज्य का प्रचार किया। उन्होंने भारतीयों से कहा कि "राष्ट्रीयता का आधार धर्म व संस्कृति ही होता है। अपने देश भारत पर गर्व करो, अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति का अनुसरण करके, भारत को फिर से उन्नत करने का प्रयास करो।" धर्म, संस्कृति और समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती ने 10 अप्रैल 1875 में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने स्त्री–शिक्षा, अंतर्जातीय–विवाह, विधवा विवाह आदि का समर्थन किया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वर्ण–व्यवस्था, जाति–पाँति, ऊंच–नीच और भेदभाव को स्वीकार नहीं किया। धार्मिक क्षेत्र में आर्य समाज ने मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड, स्वर्ग–नरक की कल्पना, यज्ञ–पद्धति, भाग्य में विश्वास आदि कुरीतियों का विरोध किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा कि वैदिक धर्म सभी धर्मों में श्रेष्ठ है। वैदिक धर्म का आधार वेद हैं, जो ईश्वर की देन हैं। दयानंद जी ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए "वेदों की ओर लौटो।" का नारा दिया। वैदिक साहित्य और संस्कृत भाषा को जन–जन तक पहुंचाने के लिए उन्होंने वेद भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य आदि प्रमुख पुस्तकें लिखी हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में स्वामी दयानंद के धार्मिक सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रवादी चिंतन का अध्ययन किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– स्वतन्त्रता, समानता, राष्ट्रीयता, संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, गुलामी, क्रांति, स्वराज, अधिकार, वैदिक धर्म।

अध्ययन का उद्देश्य– स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड, स्वर्ग–नरक की कल्पना,यज्ञ–पद्धति, भाग्य में विश्वास आदि कुरीतियों का विरोध किया। स्वामी दयानंद ने आर्य समाज के माध्यम से स्त्री शिक्षा, अंतर्जातीय–विवाह, विधवा विवाह आदि का समर्थन किया। स्वामी दयानंद के सुधारवादी कार्यों एवं राष्ट्रवादी विचारों से देश की युवा पीढ़ी को अवगत कराना ही इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है । शोध की अध्ययन पद्धति–स्वामी दयानंद के धर्म, समाज, शिक्षा और महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए किए गए कार्यों का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। स्वामी जी के सुधारों और कार्यों को पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों से एकत्रित करके विश्लेषण करने के पश्चात इस शोध पत्र को तैयार किया गया है।

प्रस्तावना– महान धर्म एवं समाज सुधारक, दार्शनिक, क्रांतिकारी, राष्ट्रवादी जननेता, स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 में गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र के मोरबी जिले में टंकारा नामक स्थान पर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता करसनजी लालजी तिवारी और माता यशोदाबाई कट्टर रूढ़िवादी ब्राह्मण थे। बचपन में इनका नाम मूल शंकर तिवारी था। मूल शंकर ने बचपन में शिवरात्रि की पूजा के दौरान एक चूहे को शिवलिंग पर चढ़ते हुए देखा, तभी से वे मूर्ति पूजा और हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियों के सख्त विरोधी हो गए थे। 1845 में विवाह होने से पहले ही मूल शंकर अपने घर से भाग गए थे और एक ब्रह्मचारी साधु के रूप में उन्होंने 1845 से 1861 तक भारत के विभिन्न शहरों का भ्रमण किया और 1861 में मथुरा में स्वामी बिरजानंद महाराज को उन्होंने अपना गुरु बनाया। गुरु की आज्ञा से उन्होंने हिंदू धर्म में सुधार करने का संकल्प लिया। उन्होंने 1874 में हिंदी भाषा में 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचना कर जनसाधारण को सभी धर्मों के वास्तविक स्वरूप से अवगत कराने का प्रयास किया। उन्होंने 1875 में मुंबई में 'आर्य समाज' की स्थापना की और उसके पश्चात समस्त भारत में आर्य समाज अनेक शाखाएं खोली गई। स्वामी दयानंद ने आर्य समाज के माध्यम से भारत में हिंदू धर्म और समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने का कार्य किया। उन्होंने आर्य समाज के द्वारा ईसाई धर्म या मुस्लिम धर्म अपनाने वाले हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म में सम्मिलित करने के लिए अभियान चलाया और बड़ी संख्या में ऐसे लोगों को पुनः हिंदू धर्म में वापिस लिया गया। 1883 में अचानक स्वामी जी की मृत्यु हो गई। स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारत में धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय सुधार कार्य किए, जो निम्नलिखित हैं:

1. धर्म सुधार के कार्य– स्वामी दयानंद ने मूर्ति–पूजा, कर्मकांड, अंधविश्वास, बलि–प्रथा, स्वर्ग–नरक की कल्पना और भाग्य में विश्वास आदि का कट्टर विरोध किया। उनकी धार्मिक मान्यताओं का मुख्य आधार वेद थे। उन्होंने भारतीयों को वेदों और उपनिषदों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हिंदू धर्म के मूल स्वरूप पर बल दिया, वह स्वरूप का जिसका निरूपण वेदों और उपनिषदों में हुआ है। उन्होंने वेदों की श्रेष्ठता का दावा किया और मंत्र–पाठ, हवन,यज्ञ–कर्म, सदाचरण और पवित्रता पर बल दिया। उन्होंने वेदों की व्याख्या इस प्रकार की, जिससे वेद अनेक वैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सिद्धांतों के स्रोत माने जा सकते हैं। स्वामी दयानंद ने हिंदू धर्म, वेदों और उपनिषदों की श्रेष्ठता के आधार पर हिंदू धर्म को इस्लाम और ईसाई धर्म के आक्रमणों से बचाने में सफलता पाई। स्वामी दयानंद ने इस्लाम और ईसाई धर्म प्रचारक, जो हिंदू धर्म का मजाक उड़ाते थे, उन पर कठोरता से प्रहार किया और उन्होंने हिंदू धर्म को उग्रवादी स्वरूप प्रदान किया। वे हिंदू जो नादानी, निर्धनता या विवशता के कारण मुस्लिम या ईसाई धर्म के अनुयायी बन गये थे, उन्हें हिंदू धर्म में वापस लाने के लिए आर्य समाज ने "शुद्धि आंदोलन" आरंभ किया और ऐसे लोगों के लिए हिंदू धर्म के द्वार खोल दिए गए, जिससे बड़ी संख्या में ऐसे लोगों को पुनः हिंदू धर्म में वापिस लिया गया। स्वामी दयानंद ने हिंदू धर्म को सरल बनाया और उसे पुनः जन–जन में लोकप्रिय बनाने का कार्य किया।

2. समाज सुधार के कार्य– स्वामी दयानंद ने हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे बाल–विवाह, बहु–विवाह, पर्दा–प्रथा, जाति–प्रथा, सती–प्रथा आदि का खुलकर विरोध किया। उन्होंने अंतर्जातीय खानपान, अंतर्जातीय विवाह, विधवा विवाह तथा पारस्परिक संपर्क पर विशेष बल दिया। वे स्त्री–शिक्षा, जातिगत समानता और अछूतों के लिए निरंतर कार्य करते रहे। वे स्त्रियों को सभी अधिकार दिलाने जाने के पक्षधर थे। संस्कृत और शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने के उनके प्रयासों ने व्यापक शैक्षिक सुधार की

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

नींव डाली। दयानंद का मानना था कि संस्कृत सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति या लिंग का क्यों न हो। सभी जातियों के लिए मंदिरों में प्रवेश का समर्थन किया तथा अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

3. शिक्षा का प्रचार–प्रसार– स्वामी दयानंद का मानना था कि भारतीयों के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से पिछड़ेपन का कारण समाज में व्याप्त निरक्षता है। उन्होंने शिक्षा की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि "इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में ना रख सके, पाठशाला अवश्य भेजें और जो ना भेजे, वह दण्डनीय हो।" भारतीयों को शिक्षित और जागृत करने के लिए आर्य समाज, गुरुकुल कांगड़ी तथा डी ए वी कॉलेज जैसे शिक्षण संस्थानों की स्थापना स्वामी दयानंद ने भारतीयों को शिक्षित और जागरूक बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इन शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी, विज्ञान, गणित और आधुनिक समय के सभी विषयों के साथ–साथ संस्कृत भाषा, वेदों और उपनिषदों का भी अध्ययन कराया जाता था। ये संस्थाएं हिंदू धर्म, संस्कृति तथा आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार प्रसार में सहायक सिद्ध हुई। स्वामी दयानंद के प्रयासों से ही भारतीय पश्चिमी शिक्षा के चंगुल से मुक्त हो सके। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को अपनी आय का 1/100 भाग, आर्य समाज, आर्य विद्यालय तथा आर्य प्रकाश समाचार पत्र के संचालन हेतु दान देना होता था। स्वामी दयानंद का मानना था कि देश और समाज की भलाई के लिए सबको तन, मन, और धन से सहयोग करना चाहिए।

4. राजनीतिक स्वतत्रंता संबंधी विचार– दयानंद सरस्वती ने समस्त भारत में समानता, स्वराज, स्वदेशी एवं स्वतन्त्रता का सन्देश घर–घर पहुँचाया। उन्होंने कहा था" राष्ट्रीयता का आधार धर्म व संस्कृति ही होता है। अपने देश भारत पर गर्व करो, प्राचीन वैदिक संस्कृति का अनुसरण करो तथा भारत को फिर से उन्नत करने का प्रयास करो। "स्वामी जी का मत था कि स्वदेशी राज्य ही सर्वोत्तम है। स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेशी वस्तुएं, और स्वभाषा आदि सभी से सम्बन्ध में उनके जो विचार थे, उनसे भारत में स्वराज्य की भावना पुष्ट हुई। वास्तव में स्वामी दयानंद स्वराज शब्द का प्रयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। भारत में निर्मित स्वदेशी चीजों का उपयोग करने और विदेशी चीजों को त्यागने के लिए लोगों से आग्रह करने वाले वह पहले व्यक्ति थे। स्वराज्य और स्वदेशी की ऐसी लहर स्वामी दयानंद जी ने चलाई, जिससे भारत में एक व्यापक क्रांति ने जन्म लिया, जिससे लोगों के मन में विदेशी शासन के प्रति आक्रोश उत्पन्न हुआ और आगे चलकर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए पृष्ठभूमि तैयार हुई।

5. राष्ट्रववाद की भावना के पोषक– स्वामी दयानंद के क्रांतिकारी विचारों, स्वराज, स्वदेशी और स्वतंत्रता की भावना से प्रेरित होकर गोविंद रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले, पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, भाई परमानंद, राम प्रकाश बिस्मिल और शहीद भगत सिंह जैसे महान सेनानी स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। लाला लाजपत राय ने स्वामी दयानंद के राष्ट्रवादी चिंतन पर गंभीर एवं अति महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए अपनी पुस्तक आर्य समाज में लिखा है "स्वामी दयानन्द का एक एक शब्द चाहे उसे सत्यार्थ प्रकाश में पढ़िये, चाहे आर्य–अभिविनय में अवलोकन कीजिये, चाहे वेद–भाष्य में देखिये, राजनैतिक स्वाधीनता की अभिलाषा से परिपूर्ण है।" इस प्रकार स्वामी दयानंद ने हिंदू धर्म और संस्कृति की श्रेष्ठता का दावा करके भारतीयों में आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना को जन्म दिया, इससे भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माण में सहायता मिली।

6. हिंदी भाषा के समर्थक– स्वामी दयानंद पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने हिंदी को 'आर्य भाषा' का नाम दिया। वे भारत की आम भाषा के रूप में अंग्रेजी की बजाय हिंदी भाषा को देखना चाहते थे, उनका कहना था कि "मेरी आंखे तो उस दिन को देखने को लिए तरस रही है, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा बोलने और समझने लग जाएंगे।" उन्होंने 1875 में अपनी अपनी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिंदी में लिखा। ज्यादा से ज्यादा भारतीयों को जागरूक करने के लिए उन्होंने ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य और अष्टाध्यायी भाष्य को संस्कृत से हिंदी में अनुवाद किया। उन्होंने हिंदी का उपयोग अपने विचारों को जन–जन तक पहुंचाने की लिए किया।

निष्कर्ष– निःसंदेह स्वामी दयानंद महान देशभक्त और प्रतिभा संपन्न आध्यात्मिक नेता थे। वे भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रवादी आंदोलन और स्वराज प्राप्ति की दिशा में एक सशक्त नेतृत्व प्रदान किया और भारतीय राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामीजी आधुनिक भारत के धार्मिक नेताओं में प्रथम महापुरूष थे, जिन्होने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म में एक नयी चेतना का आरंभ किया था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल ढींगरा, रामप्रसाद बिस्मिल, गोपालकृष्ण गोखले, सरदार अर्जुन सिंह श्री किशन सिंह, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह का नाम उल्लेखनीय हैं। डॉक्टर धर्मदेव विद्यार्थी के शब्दों में "वे मानव ही नहीं महामानव थे। उनके राष्ट्र, मानव कल्याण व समाज हित के लिए किए गए योगदान अमूल्य है।" इस प्रकार स्वामी दयानंद सरस्वती एवं उनकी मानव कल्याण राष्ट्र सेवा कृतियों का खंडन स्त्री सशक्तिकरण स्वतंत्रता और समानता की पोषण के लिए किए गए महान कार्य सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आजीवन प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सत्येंद्र त्रिपाठी एवं कृष्ण दत्त द्विवेदी भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप एवं विकास विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1999.
2. जे एन फौजदार आधुनिक भारत में धार्मिक आंदोलन।
3. के एस भारती (1998) प्रख्यात विचारकों का विश्वकोश, खंड–7, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी पृष्ठ– 188.
4. कृष्ण सिंह आर्य, पीडी शास्त्री (1987) स्वामी दयानंद सरस्वती उनके जीवन और कार्य का एक अध्ययन, मनोहर पब्लि., पृष्ठ सं. 327.
5. सिंघल मीनू (2009) दयानंद सरस्वती, प्रभात प्रकाशन, आईएसबीएन 9788 184300178
6. भट्टाचार्य नरेंद्र नाथ (1996) भारतीय धार्मिक इतिहास लेखन, मुंशीराम मनोहर लाल प्रकाशक ट्रस्ट संख्या 58.
7. बसंत कुमार लाल (1978) समकालीन भारतीय दर्शन मोतीलाल बनारसी दास पकाशक पृष्ठ सख्या– 202.
8. धनपति पांडे (1985) स्वामी दयानंद सरस्वती प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ संख्या 8.
9. आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का आधुनिक भारत का विचार, इंडिया टुडे (30 अक्टूबर 2018) 20 मार्च 2025 को लिया गया।
10. भावना नायक (1989) हमारे नेता, खंड 4 चिल्ड्रंस बुक टस्ट पृष्ठ संख्या 60.

*****